International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हिन्दी और हिन्दुस्तान को अमीर खुसरो की संरचनात्मक देन

डा0 प्रार्थना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
फ.अ.अ.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
महमूदाबाद ,सीतापुर

"जे हाल मिस्कीं मकनु

तगाफुल,दुराय नैना बनाय बतियाँ

किताबें हिजरां, न दारम ऐ जां,

ना लेहू काहे लगाय छतियां।"

फारसी और ठेठ ब्रजभाषा के मिश्रण से ऐसे संश्लिष्ट काव्य की रचना करने वाले अमीर खुसरो का स्वयं का व्यक्तित्व भी बहुआयामी और संश्लिष्ट था। अमीर खुसरो न केवल अपने समय की उपज थे बल्कि अपने समय से बहुत आगे थे। अमीर खुसरो ने अपने समय को दिशा प्रदान की । भारत की जिस सामासिक संस्कृति और हिन्दी भाषा की जिस समाहार शाक्ति की आज बात की जाती है उसके बहुत से उपकरण अमीर खुसरो ने ही तैयार किए थे।

अमीर खुसरो एक शायर, कहानीकार, व्यंग्यकार, शब्दकोषकार, भाषाविद, बहुभाषी, इतिहासकार, दार्शनिक, अखबारनवीस, संगीतज्ञ, फौजी होने के साथ ही सूफी संत भी थे। अमीर खुसरो के व्यक्तित्व के बहुआयामी पहलुओं को देखकर ही 'शिबली नोमानी' ने कहा था–

"हिन्दुस्तान में छह सौ बरस से आज तक इस दर्जे का जामे–कमालत (उत्कृष्टताओं से परिपूर्ण) नहीं पैदा हुआ। .....फिरदौसी, सादी, अफी, नजीरी, बेशुबा अकलीम सुखन के बादशाह हैं लेकिन उनकी सीमा एक अकलाम से आगे नहीं बढती। फिरदौसी मसनवी से आगे नहीं बढ. सकता, सादी कसीदे को हाथ नहीं लगा सकते।
अवनरी मसनवी और गजल को छू नहीं ,सकता। हाफिज, उर्फी, नजीरी गजल के,दायरे से बाहर नहीं निकल सकते। लेकिन अमीर खुसरो की साहित्यिक सत्ता,
में गजल ,रुबाई, कसीदा और मसनवी सब कुछ दाखिल है और काव्यकला की ,छोटी–मोटी विधाएँ ,अर्थात् तजमीन, मुस्तजाद सनाय (अलंकार आदि) व बदाय,
की तो गिनती ही नहीं।"सल्तनत काल, साहित्यिक समृद्धि का युग रहा है। यह वह युग था जब संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में असाधारण प्रगति के साथ–साथ नई भाषाओ का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रयोग प्रारंभ हुआ। नया शासक वर्ग एक नई भाषा और और लिपि के साथ आया। फारसी, अरबी, संस्कृत और दिल्ली के आस पास की बोलियों के आपसी आदान–प्रदान से उर्दू जैसी संश्लेषणात्मक भाषा की उत्पत्ति और विकास हुआ। इस दृष्टि से सबसे प्रभावशाली विद्वान अबुल हसन थो जो अपने उपनाम अमीर खुसरो से प्रसिद्ध हुए । मुगलकालीन इतिहासकार बदायूँनी ने अमीर खुसरो की प्रशंसा करते हुए लिखा–"कवियों के राजा की शोभा, यात्रा के पश्चात् उसके पूर्ववर्तियों की कविताएं सूर्य के उदय पर तारों के समान धुंधली पड गई।"

तूती ए हिन्द–

अमीर खुसरो कई जबानों के उस्ताद थे। मसलन फारसी, अरबी, तुर्की, पश्तो संस्कृत, कश्मीरी, सिंधी, पंजाबी, खडीबोली और उसकी अनेक उपभाषाऐं जैसे ब्रजभाषा, हरियाणवी, राजस्थानी, अवधी, भोजपूरी, कौरवी, बुंदेली आदि। भाषा के सन्दर्भ खुसरो ने स्वयं एक किस्सा बयान किया है कि एक दिन उनकी माँ ने उनकी लोकप्रियता का कारण पूछा। अमीर खुसरो ने शेर–शायरी को बताया तो माँ ने भी सुनने की इच्छा जाहिर की। बेटे ने एक–एक करके माँ को तीन फारसी में शेर सुनाया। पर माँ को पसंद ना आए। इस पर खुसरो ने एक शेर माँ को हिन्दी में सुनाया। इसे सुनकर माँ प्रसन्न होकर बोली कि बेटे तुमको इसी जबान में लिखना चाहिए। ऐसा करने पर ही तुम दुनिया में शोहरत हासिल करोगे।

अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई0 में पटियाली जिला एटा में हुआ। आठ वर्ष की अवस्था में उनके पिता की मृत्यु हो गई। खुसरो अपने नाना इमादुलमुल्क के संरक्षरण में दिल्ली आ गए जो सुल्तान ग्यासुद्दीन बलबन से अमीर थे। नाना की मृत्यु (1273 ई0) खुसरो सुल्तान बलबन के भतीजे अलाउद्दीन किशलू उर्फ मलिक छज्जू के यहाँ नौकर हो गए। दो वर्ष के अंदर समाना के शासक बुगराँ खाँ के पास पहुँच गए। बुगराँ खाँजब बंगाल गया तो "यह बुलबुल ए हजार दास्तान भी बुगराँ खाँके साथ था और इस तरह दिल्ली का तूती कुछ दिनों बंगाल की तराई में चहकता रहा।" वापस दिल्ली आने के बाद बलबन के बडे बेटे मुहम्मद के संरक्षण में मुल्तान फिर सैन्यबंदी के रूप में बल्ख, आजाद होकर फिर दिल्ली और वहँ से अवध के शासक ख्वाजा अहसान के साथ अवध में दो वर्ष रहे। कैकुबाद के समय से प्रायः दिल्ली ही रहे। 1323 ई0 में उनका देहाँत हुआ।

भाषा की दृष्टि से देखा जाय तो अमीर खुसरो का अधिकांश समय दिल्ली में ही बीता। उनकी माता भी दिल्ली ही रही। दिल्ली से उनका संबंध कभी टूटा नहीं। हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में उनकी भाषा दिल्ली की भाषा होनी चाहिए। मसनवी 'नूहसिपहर के तीसरे सिपहर में खुसरो अपने काल के हिन्दुस्तानी भाषाओं की सूची देते हैं –

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सिंदी ओ–लहौरी–ओ–कश्मीर–ओ गर,

धुर समंदरी तिलंगी–ओगुजर माबरी–ओ गोरी–ओ बंगाल–ओ अवध,

दिल्ली–ओ–पैरामनश अंदर हंमा हद ई हमा हिन्दवीस्त जि ऐय्याम–ए कुहन ,

अम्मा बकारस्त बहर गूना सुखन।

(सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी, कन्नड, तेलगू, गुजराती, तमिल, असमिया, बंगला, अवधी, दिल्ली और उसके आस–पास जहँ तक उसकी सीमा है इन सब को प्राचीनकाल से 'हिन्दवी' नाम से जाना जाता है। बहरहाल अब मैं अपनी बात शुरू करता हूँ।अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान की जिन 12 भाषाओं का उल्लेख किया पाँचवे मिसरे में उन सबको 'हिन्दवी' कहा है। अमीर खुसरो की भाषा इस दृष्टि से देहलवी हुई। अमीर खुसरो का भाषाई परिपेक्ष्य बहुत व्यापक था। दिल्ली के आस–पास की खडीबोली के भाषागत रूप पर उसकी व्यंजना शक्ति पर उनकी आस्था अनुभवसांचा थी। जो भाषा (बोली) हर प्रकार की आवश्यकता पूरी कर सके तथा जनसाधारण द्वारा प्रयुक्त होती रही है उसका स्वाभाविक, अधिकार खुसरो ने ही प्रथमतः स्वीकार किया। उसको बडे अभिमान के साथ अपने काव्य में स्थान दिया।–

चु मन तूती ऐ हिन्दम अर रास्त पुर्सी ,

जि मन हिन्दवी पूर्स ता नग्ज गोयम,

(चूँकि मैं तूती–ऐ–हिन्द हूँ इसलिए मुझसे हिन्दवी के संबंध में पूछिए ताकि उसमें मैं अपनी काव्यकला प्रदर्शित कर सकूँ।)खडीबोली का लोक प्रचलित सहज रूप के मार्गदर्शन का श्रेय खुसरो को ही प्राप्त है।

हिन्दी उर्दू या हिन्दवी का जो वर्तमान भाषिक अर्थ है उसका तेरहवीं सदी में होने का प्रश्न ही नहीं उठता। तेरहवी सदी में प्राचीन ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश, पंजाबी, राजस्थानी और खडी बोली का वह रूप जो लोक प्रचलित था जो कालांतर में मानक रूप ग्रहण कर गई ।खुसरो की हिन्दवी रचनाओं में जो भाषा मिलती है वह आज की हिन्दी से मेल खाती है। तेरहवीं सदी में वह प्रारंभिक भाषा जो वर्तमान हिन्दी उर्दू का प्राचीन रूप थी। जो लश्करगारों सैन्य–शिविरों और व्यापार के उद्देश्य से दो भिन्न प्रांतों दो भिन्न संस्कृतियों, दो भिन्न भाषाओं को जोड़ रही थी। यह भाषा अभी कच्ची थी , धीरे –धीरे पनप रही थी। आकार ले रही थी, बोली से शनैः शनैः भाषा में परिवर्तित हो रही थीं। खुसरो के समय तक इसे कोई पूर्ण नाम या भाषा का दर्जा नहीं मिल पाया था। यह अपने स्वरूप को भी नहीं ग्रहण कर पायी थी। यह आम लोगों की बोलचाल की भाषा थी जिसका साहित्यिक

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रयोग अभी दूर की कौडी थी। अपने ग्रंथ 'गुर्रतुल कमाल' के प्राक्कथन में हिन्दवी का बार–बार प्रयोग दिल्ली व आस–पास की इसी भाषा के लिए किया गया है।

अमीर खुसरो भारत के पहले ऐसे कवि हैं जिन्होंने समस्त भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण अपनी मसनवी 'नूर सिपहर' में किया जिसका ऐतिहासिक महत्व है। सल्तनत काल भाषा की दृष्टि से फारसी से समृद्वि था। किंन्तु अमीर खुसरो भाषा सम्बन्धी पूर्वाग्रह से ऊपर थे। जिस भाषा का स्वरूप भी न निश्चित हो पाया तो उसे संस्कृत और फारसी जैसी क्लासिक भाषाओं के समानांतर खडा करना निःसन्देह अमीर खुसरो जैसे हरफनमौला के बस का ही था।

बहुत कठिन है डगर पनघट के ,

XXX

सकल बन फूल रही सरसों ,

XXX

चल खुसरो घर अपने,

इन सभी पंक्तियों में बिल्कुल उसी हिन्दी का प्रयोग है जो आज है। जबकि तेरहवीं सदी में इस पर ब्रज का स्पष्ट प्रभाव था। चलू को चल, घर , आज,फूल रही इत्यादि को बिल्कुल नये स्वरूप में लाकर हिन्दी को दिशा निर्देश दे दिया।'नूर सिपहर' में एक स्थान पर उन्होंने ने पैतृक भाषा तुर्की और फारसी पर हिन्दी को वरीयता दी –

इस्वात गुफ्त हिन्द बहुज्जत कि राजेह–अस्त ,

बरपारसी–ओ तुर्की अज अलफाज ए– खुशगवार,

(फारसी और तुर्की की अपेक्षा हिन्दवी अपने मधुर शब्दों के कारण अधिक लोकप्रिय है) अमीर खुसरो के हिन्दवी काव्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण परम्परा 'गुर्रःतुल कमाल'की है गुर्रःतुल कमाल' की भूमिका में कहते है–

तुर्क ए हिन्दुस्तानेम मन हिन्दवी गोयम चु आब

शक्कर–ए–मिसरी न दारम कज. अरब गोयम सुखन

अमीर खुसरो ने भाषा के स्वरूप के साथ छन्दों में भी प्रयोगशीलता को अपनया। फारसी के साथ ठेठ ब्रज और खडीबोली का प्रयोग किया जिसमें न छन्ददोष था।(मैं हिन्दुस्तान में जन्मा एक तुर्क हूँ। मैं हिन्दवी धराप्रवाह बोल सकता हूँ। मेरे पास अरबी भाषा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की मिठास नहीं है कि उसमें बातचीत करूँ।) और रस अनुभूति निर्बाध था।इससे कविता जीवन के निकट आ गई। खुसरो का पाठक समाज निर्विशेष हो गया।

शबाने हिज्राँ दराज चूँ जुल्फ बरोजे वसलत चूँ उम्र कोताह ,

सखी पिया को जो मैं न देखूँ तो कैसे काँटे अँधेरी रतियाँ,

चन्दन, काठघर, पटरा, बसीठ, दही, गरीब आदि।हिन्दी शब्दों का प्रयोग उन्होने डटकर अपने फारसी ग्रंथों में किया। हिन्दी और फारसी का प्रयोग करके उन्होने दो सखुने लिखें–

कूबतेरूहचीस्त प्यारी को कब देखिए,

उत्तर : सदा या माशूक।

इसमें बौद्धिक व्यायाम के साथ मनोविनोद भी था जो अपने आप में बताता है कि हिंदी शब्द विन्यास में फारसी से किसी अंश में कम नहीं है। सखुनों में खडीबोली का रूप बहुत परिष्कृत दिखता है जैसे –

रोटी जली क्यों? घोडा अडा क्यों? पान सडा क्यों?

उत्तरः फेरा न था।

पथिक प्यासा क्यों? गधा उदास क्यों ?

उत्तर : लोटा न था।

इसी प्रकार मुकरियों और पहेलियों में खडीबोली का प्रयोग दिखता है जैसे 'एक नार ने अचरज किया। सांप मारि पिजरे में दिया।'में ने का प्रयोग (जो पूर्वी बोलियों में नहीं किया गया था) इस बात को पुष्टि करता है। यहाँ ने का बिल्कुल आज की तरह ने का प्रयोग दिखता है। खुसरो से पहले हमें 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता। कर्तृ कारक के सप्रत्यय होने पर क्रिया का कर्म के लिंग वचनानुसार विकार होना,जो रूप आज पाया जाता है। वैसा ही साढे सात सौ वर्ष पूर्व खुसरो प्रयोग कर रहे थे।

अमीर खूसरो ने हिन्दी साहित्य को पहेलियाँ दी। भारत में पहेलियों की परम्परा पुरानी है। हमारे प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद, ब्राह्मण, उपनिषदों और काव्यों में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष पहेलियों के दर्शन हो जाते हैं। खुसरो ने लोक प्रभाव से पहेलियों की रचना की। लोक साहित्य में पहेलियों का रिवाज अमीर खुसरो ने शुरू किया। उन्होंने दो प्रकार की पहेलियाँ लिखी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1) बूझ पहेली(अंतर्लिपिका)– यह वे पहेलियाँ हैं जिनका उत्तर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष पहेली में दिया होता है यानि जो पहेलियों पहले से ही बूझी गई हो जैसे–

गोल मटोल और छोटा–मोटा, हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कहे नहीं झूठा, जो न बूझे अकिल का खोटा।
उत्तरः लोटा।

खुसरो की बूझ पहेलियों के भी दो वर्ग बनाए जा सकते हैं। कुछ में तो उत्तर एक ही शब्द में रहता है। दूसरे प्रकार की पहेली में कभी–कभी उत्तर के लिए दो शब्दों को मिलाना पडता है। जैसे

श्याम बरन और दँत अनेक, लचकत जैसे नारी,
दोनों हाथ से खुसरो खींचे और कहे तू आरी।
उत्तरः आरी

2) बिन बूझ (बहिर्लिपिका)– इसमें पहेली का उत्तर दिया नहीं होता है। उदाहरण–

एक जानवर रंग रंगीला,बिना मारे वह रोबे,
उसके सिर पर तीन तिलाके,बिन बताए सोबे,
उत्तरः मोर

एक थाल मोतियों से भरा सबके सर पर औंधा धरा ।
चारों ओर वह थाल फिरे , मोती उससे एक न गिरे।
उत्तरः आसमान

3) दोहा पहेली– कुछ पहेलियाँ अमीर खुसरो ने ऐसी भी लिखीजो अपने अर्थ में आध्यात्मिक थीं। जैसे –

उज्जवल बरन अधीन तन,एक चित्त हो ध्यान।
देखत मैं तो साधु है, पर निपट पाप की खान।
उत्तरः बगुला पक्षी।

अचरज बंगला एक बनाया, बाँस न बल्ला बंधन धने।
ऊपर नींव तरे घर छाया , कहे खुसरो घर कैसे बने।
उत्तरः बया पक्षी का घोंसला

ये अमीर खुसरो की पहेलियों आम जनो से लेकर विद्वजनों तकके लिए थी। कुछ पहेलियाँ ऐसी हैं जिनमें फारसी, अरबी और संस्कृत तीनों भाषाऐं आ गई। जैसे–

आधा बकरा सारा हाथी
हाथ बँधा देखा एक साथी

एक जमाने में पहेलियों यूँ भी बनाई जाती थी कि शब्द के टूकडें करो और कुछ जो ध्वनियों हैं उन्हें इधर या उधर लगाओं तो अर्थ सामने आ जाए। उपरोक्त पहेली का अर्थ है गजरा । बकरा को आधा करो ,बक रा, साथ हाथी यानि गज। गज+रा= गजरा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संस्कृत पृष्ठभूमि से आये व्यक्ति हाथी से गज समझ लेगें पर फारसी का व्यक्ति इसे नहीं समझ पायेगा। वाक्य विन्यास न केवल हिन्दी की तरह है बल्कि इसमें नई साहित्य की विधाऐं भी ईजाद हुई । अगर बाल साहित्य की दृष्टि से देखे तो खुसरो की पहेलियाँ बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन के साथ उनकी जिज्ञासा और जानकारी भी बढाती है। खुसरो साहित्य में पहली बार आमजन के मनोरंजन , शब्द ज्ञान और जानकारी के आधार पर और उनसे जुडा साहित्य लिखा गया। साहित्य की नई विद्या के तौर पर निस्बतें, कहमुकरियों, ढकोसले इत्यादि सामने आये। उदाहरण के लिए

1) निश्बतें–ये पूर्ण पहेलियाँ तो नहीं है परन्तु इसमें भी पहेलियों की भाँति बूझने की प्रवृत्ति है। ये नवीन विधाऐं उनके पूर्व अन्यत्र नहीं मिलती+निस्बत अरबी भाषा
का शब्द है। इसका अर्थ संबंध या तुलना है। निस्बतों का मूल आधार है एक शब्द के कई अर्थ। जैसे–

क) आदमी और गेहूँ में क्या निस्बत है?
उत्तरः बाल।

ख) मकान और पायजामे में क्या निस्बत हैं?
उत्तरः मोरी।

2) कहमुकरियाँ मुकरियाँ (पहेलीनुमा गीत)– अमीर खुसरो हिन्दी के पहले ऐसे कवि हैं जिन्होने पहेलीनुमा गीत लिखे 1 इन्हें विभिन्न रागों में बाँधकर आज भी
गाँव, शहरसे लेकर के आम लोगों से लेकर संगीत घरानों के लोग गाते हैं। कह मुकरियों का अर्थ है किकिसी बात को कह देना तथा मानने से मुकर
जाना। यहाँ चार पंक्तियों में होती है। तीन में पहेली और चौथी पंक्तियों में पहेली का उत्तर होता है–

वेा आवे तब शादी होवे , उस बिन दुजा और न कोय
मीठे लागे बाके बोल , ऐ सखी साजन न सखी ढोल।

अमीर खुसरो ने बच्चों ,गाँव की गोरियों और दैनिक जीवन से जुडे विषयेां को लिया। आधुनिक हिन्दी के जनक बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र खुसरों से इतने प्रभावित थे कि खुसरो, की शैली में ही उन्होंने नये जमाने की मुकरियां रचीं–

तीन बुलाएं तेरह आवे , निज निज विपता रोई सुनावै।
आँखें फूटे भरा न पेट क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट

3)ढकोसले–

अमीर खुसरो ने हिन्दी साहित्य में एक नवीन विधा ढकोसले या अनमेलियाँ का भी पदार्पण किया। ढकोसलों का प्रचलित अर्थ है आडम्बर, पाखंड या एक विशेष अर्थ न हो और इतनी बेतुकी लगे कि एकदम से हँसी आ जाए। इनका आविष्कार खुसरो ने आम लेागों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का मन बहलाने व हँसाने के उद्देश्य से किया।इसके साथ हीवह एक सीख भी दे जाती है–

खीर पकाई जतन से और चरखा दिया चलाय,
आयो कुत्तों खा गयेा, तु बैठी ढोल बजाय , लापानी पिलाय।

अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य अपनी लोकप्रियता के कारण पीढी दर पीढी हस्तांतरित होता रहा है और इन सात शाताब्दियों में वह हमारी लोक परम्परा का हिस्सा बन गया। अमीर खुसरो ने स्वयं कहा है कि मैने हिन्दवी की कुछ कविताऐं और गद्य रचनाऐं मित्रों को भेंट की है। खुसरो ने अपना हिन्दी काव्य कभी नियमित रूप से एकत्र नहीं किया । वस्तुतः जनजीवन में प्रचलित लोक साहित्य को साहित्यिक स्थान दिलाने का प्रथम श्रेय हिन्दवी के कवि अमीर खुसरो को ही है। हिन्दवी में मनोरंजक साहित्य की सृष्टि को मूल कारण सम्भवतः लोक जीवन में उनकी स्वाभाविक रूचि एवं उत्तर भारत के शास्त्रीय और लोक संगीत से उनका निकट का परिचय था। डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर 'संस्कृति के चार अध्याय' में कहते हैं कि यहाँ की जनभाषा (हिन्दवी) खुसरो के ध्यान पर कैसे चढ. गई इसका कारण यह हो सकता है कि खुसरो परदेसी होने के कारण यहॉ के साहित्य से इतने परिचित नहीं रहे होंगे कि उसकी परम्परा उन पर आतंक जमाती। अपने मुख्य भाव तो वे फारसी में लिखते थे। हाँ जनता के मनोरंजन के लिए कुछ चीजें उन्होनं यहाँ की भाषा में भी कह दी।अमीर खुसरो से पूर्व रासो काव्यों के रूप में निरर्थक शूरवीता तथा श्रृंगारिक रचनाओं या नाथपन्थियों की उलटवासियॉ साहित्य की मुख्य धारा के तौर पर चली आ रही थी। खुसरो की रचनाओं के द्वारा साहित्य जन जीवन के समीप आ गये बल्कि जनमन में रच बस गया ।

"काहे को दीनो विदेस , सुन बाबुल मोरे
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहुकत घर घर जाँ ।
XXX
बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाय।

आज भी भारतीय आम मानस में बसा यह मार्मिक गीत आने आप में खुसरो की लोकप्रियता को सिद्ध करता है। खुसरो ने अपनी सृजनात्मक क्षमता से उस काव्य भाषा को जीवंत कर दिया जो अभी हिन्दी और उर्दू के रूप में निर्मित होनी थी। आगे चले कर कबीर, रैदास जैसे संतकवियों की भाषा बनी। कबीर कहते हैं –

जो बिछुडे हैं पियारे से भटकते दर बदर फिरते।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हमारा यार है हममें हमन को इंतजारी कराया ।

कबीर पर साफ खुसरो का प्रभाव दिखता है। इस दृष्टि से अमीर खुसरो युग द्रष्टा नजर आते हैं।लोक प्रचलित भाषा के क्लासिकी साहित्यिक भाषा के समान मान्यता देना खुसरो के कालातिक्रांत साहस का ठोस प्रमाण है। भावी राष्ट्रभाषा का व्याकरण नहीं लिखा किन्तु परोक्ष रूप से इसका ढाँचा बनाकर आगे आने वाली पीढियों का मार्गदर्शन किया।

संस्कृतियों की अन्तर्क्रिया के अग्रदूतः अमीर खुसरो।

तेरहवीं– चौदहवीं सदी (1253–1325 ई0) के हिन्दुस्तान की सबसे शानदार अजीम शख्सियत अमीर खुसरो थे जिसने दरबारी चकाचौंध के साथ दरवेश का जीवन भी जिया। जिसेने दिल्ली सल्तनत के सातशासकों के दरबार में रहकर बरबादी और आबादी, तबाही और तामीर, जंग और अमन के बीच हिन्दुसतान के समाज, लोगों मौसम, त्यौहार इत्यादि के बहुत दिलचस्प किस्से बयान किए। वह इतिहासकार के साथ ही सूफी, शायर मौसिकीकार आदि अनेक पहलूओँ को खुद में समेटे था। अतः उसने इतिहास के शासकों दरबारों और युद्धों तक सीमित नहीं रहा। उसने समाज, संस्कृति ,इश्क संगीत, तसल्तुफ पर नजर डाली जिसने जिससे एक नई संश्लेषणात्मक दृष्टि का जन्म हुआ।

इतिहास की नजर से देखें तो यह वह समयथा जब हिन्दुस्तान में मुस्लिम सल्तनत की बुनियाद पड रही थी। एक नया शासक वर्ग जिससे दो भिन्न धर्म , दो भिन्न भाषाऐं , भिन्न सभ्यताऐं एवं संस्कृतियों आमने सामने आ खडी हुई ।इनके मध्य अन्तर्क्रिया तय थी। कई बार इस अन्तर्क्रिया की प्रवृत्ति संघर्षात्मक तथा कई बार समन्वयात्मक रही। हिन्दु मुस्लिम संस्कृति के इस समामेलन में सर्वाधिक प्रमुख भूमिका भारत के पहले बहुसंस्कृतिक व्यक्तित्व के मालिक अमीर खुसरो की रही । इस संस्कृतिक के बहुत सारी बुनियादी ईटों का निर्माण अमीर खुसरो ने ही किया।

अमीर खुसरो की स्वंय की शाख्सियत बहुआयामी थी। हम जानते हैं कि उनके पिता अमीर सैफुउद्दीन महमूद तुर्किस्तान के लाचेन कबीले के सरदार थे तथा मंगोलों के अत्याचार से तंग होकर इल्तुतमिश के समय भारत आये। उनकी माँ दौलत नाज हिन्दु थी। राजनीतिक दबाव में आकर मुसलमान बने इस परिवार में (नाना इमादुलमुल्क के) हिन्दुओं के रीति रिवाज का असर था। गाना,बजाना और संगीत का महौल थां दो अलग संस्कृतियों, घरानों और परम्पराओ के मेल ने खुसरो का व्यक्तिव बहुसांस्कृतिक बना दिया था। हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिक सांस्कृतिक जडता से वह मुक्त थे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अमीर खुसरो पहले इतिहासकार और कवि है जिन्होंने हिन्दुस्तान का नक्शा खींचा। अमीर खुसरों को अपने हिन्दुस्तानी होने पर गर्व था। मसनवी नुहसिपिहर में कहते हैं।—"हस्त मरा मौलिद ओ मावा ओ वतन ।" (यही मेरे जन्मस्थान और यही मेरी मातृभूमि है।) मसनवी नह सिपिहर का सबसे बडा और महत्वपूर्ण तीसरा अध्यायपूराहिन्दुस्तान की प्रशंसा में जिनमें हिन्दुस्तान के पक्षियों, मौसमों फलों फूलों आदि सभी बातों के बारे में शेर कहे गए है।दीवान तोहफतुस्सिग्र की प्रस्तावना में खुसरो कहते हैं कि 'मैं हिन्दुस्तान के सीधे, सच्चे, पवित्र और स्वाभिमानी आम लोगों को बहुत प्यार करता हुँ बल्कि उन्हें पूजता हुँऔर यही मेरा शगल हैं । मुझे यह कहते हुऐ खुशी होती है कि खुश रहने के लिए ये सीधे सादे, मासूम व भोले लोग काफी है। इन्हीं सबसे हिन्दुस्तान का नाम दुनिया में सोने की चिडिया है।'उन्होंने हिन्दुस्तान के ब्राह्मणेां के ज्ञान की तारीफ की उन्होने लिखा कि बाहर के मुल्कों के विद्वान भारत आकर बनारस में विद्या ग्रहण करते हैं। गाणित और शतरंज को, दुनिया को भारत की देन माना।

अमीर खुसरों इस मायने में अपने साथी इतिहासकार और कवियों से जुदा थे कि उन्होने इतिहास की चर्चा इस्लामी साम्राज्य से नहीं बल्कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में की। उन्होंने अपने समय को हिन्दु मुसलमान संघर्ष के रूप में न होकर तर्कसंगत रूप में देखा । रसूल के कथन को मानते हुए उन्होंने वतन की मुहब्बत को ईमान से जोडा।

बीं जे रसूल आमेदः किः जूमर—ए—दीं।
हुब्ब—ए— वतन हस्त जे ईमां वः यकी।

हिन्दुस्तान के प्रति इस बेपनाह मुहब्बत के कारण उन पर धार्मिक पक्षपात का आरोपभी लगा। हिन्दु धर्म के प्रति उनका सम्मान देखकर उन पर बुतपरस्ती का आरोप लगाया गया जिसका उत्तर उन्होने दिया—" खलक मी गोयद के खुसरो बुतपरस्ती मीं कुनद आरे आरे मी कुनम बा खलक वा दुनियाकार नीस्त।"
(दुनिया कहती है कि खुसरो बुतपरस्ती करता है। हाँ हाँ मैं करता हाँ। मेरा दुनिया से कोई सरोकर नहीं ।)वास्तव में खुसरो मानव निर्मित बंधनो से परे थे।उन्हें किसी जाति धर्म के बंधन में नहीं बांधा जा सकता। हिन्दुस्तान के जिस तहजीब का उन्होंने तसव्वुर किया कि हिन्दुस्तान में तुर्की , फारसी और तमाम लोक भाषाऐं बोली जाती हैं। दूसरे किसी मुल्कमें इतनी भाषाऐं नहीं बोली जाती हैं। उन्होने हमारी विरासत को सराहा। हिन्दुस्तान से मुहब्बत का आलम इस कदर है कि बुराई में भी तारीफ ढूंढ लेते हैं जैसे सती। खुसरो कहते हैं कि हिन्दु स्त्री से ज्यादा कोई मर्दाना हिम्मतवर नहीं हैं।

दो संस्कृतियों के परस्पर संघात से खुसरो का व्यक्तित्व निर्मित हुआ था। वह किसी भी प्रकार की धार्मिक, सामाजिक या भाषाई संकीर्णता से मुक्त थे। उन्होने लिखा"मैं प्रेम का काफिर हूँ— मुझे मुसलमानी की जरूरत नहीं मेरी तो एक एक रगतार बन गई है— जनेऊ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की जरूरत ही नहीं।"खुसरो की इसी समन्यवय की भावना ने उनके तार भारतीय जनमानस से जोड दिए । भारत के जन–जन के मन में बसे राम को मान देकर दो संस्कृतियों के अन्तराल को भर दिया–

शोखिए हिदू बबी कू दिन बेबुर्द, अज खास ओ आम,
राम इ मन हेरगिज न शुद हरचंद गुफतम राम राम,

(हर खास और आम व्यक्ति यह बात भली भाँति समझ ले, राम हिन्दके शानदार शख्स हैं। राम तो मेरे दिल में बसे हैं। वे मुझसे हर्गिज अलग न होंगे औरमैं जब बोलूँगा तो राम राम बोलूँगा।अमीर खुसरो खानेजहाँ अमीर अली सरजानदार के साथ अवध भी रहे । यहीं उनका परिचय रामनाम से हुआ जिस पर उन्होने मसनवी 'फिराकनामा' लिखी इसमें अमीर खुसरो ने भगवान श्रीराम, माता सीता, भाई लक्षमण और जन्मभूमि अयोध्या के बारे में करीब 180 शेर कहे। मसनबी फिराकनामा की भारत में कोई पाण्डुलिपि नहीं है। एक दुर्लभ पाण्डुलिपि तुर्की की सुलेमानिया लाइबेरी में है। पाण्डुलिपि संख्या 3912 है। यह 1278 ई0 में लिखी गई है। राम को अनके प्रचलित अर्थ के अतिरिक्त उन्होने भक्ति में समन्वय स्थापित करते हुए उसे सूफी भक्ति से भी जोड दिया जो आगे चलकर कबीर नानक ओर आधुनिक काल में गाँधीजी के भक्ति का भी आधार बनी।

राम कौन बुझावै तपन मोरे मन के,
लागी आग लगन की हाय राम,
मोहे निजाम की हाय लागी लगन ,
राम के विरह में हाय जागी अगन,
मन में लगी मोरे बिरहकी अगन।

कहते है कि अपने गुरू हजरत निजामुद्दीन के कहने पर उन्होंने भगवान कृष्ण पर एक गद्य पुस्तक'हालते कन्हैया व किशना' नाम से लिखी। भगवन श्रीकृष्ण उनके सूफी संगी में रच गए थे।–

बन के पंछी भये बाँवरे, मन के पंछी भये बाँवरे। ,

कैसी बीन बजाई साँवरे, तार तार की तान निराली।

हमारी लोक परम्परा में कई विधाएँ हैं जिनका मूल ढूँढना मुश्किल है। वो साझी विरासत के रूप में पीढी दर पीढी आगे बढती जाती है। चाहे वे गीत संगीत हो, कविता, पहेलियाँ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हो। परम्परा से चली आ रही हिन्दी में जिन पहेलियों को हम सुनते आ रहे हैं वो सारी की सारी फारसी हिन्दवी सूफी शायर अमीर खुसरो के नाम से दर्जे हैं।

अमीर खुसरो ने जीवन के हर पहलू के को अपने शेरो में गीतों मे पहेलियों मुकरियों में समेटा।अपने अवध प्रवास के दौरान खुसरो ने 'अस्पनामा'नामक पुस्तम लिखी। खुसरो लिखते हैं "वाह क्या शादाब सरजमी है येअवध कीदुनिया जहान के फल फूल मौजूद। कैसे अच्छे मीठी बोली के लोग मीठी व रंगीन तबियत के इंसान । धरती खुशहाल जमीदार मालामाल।" यहीं से खुखरों की देहलवी में अवध की चाशनी धुल गईं।उन्होने हिन्दुस्तान के आमजनजीवन से जुडी अनेक अभिव्यक्तियों दी। उन्होने हर मौसम को नई धुन नये अल्फाजों के साथ दी। आज भी भारतीय समाज के लिए सावन का महीना खुसरो के गीतों के बिना अधुरा रहा जाता है–

अम्मा मेरे बाबा को भेजो री कि सावन आया,

चाहे वह विवाह का विषय हो–

बाबुल मोरा नैहर छूटा ही जाए ,

हँ रे बाबुला तोरा संग छूट्यो हो जाय।

विदा होती बेटी की पीड.ा को महसूस करना वह भी उस काल में जब स्त्री को इंसान होना हो मयस्सर नाा था। विदा की पीडा को शब्दों में गुंथ दिया–

काहे को वियाहे विदेश, अरे सून बाबुल मोरे,,

काहे के बियाहे विदेश अरे लखि बाबूल मोरे,

हम तो बाबूल तोरे पिंजरे की चिडिंया।

अरे कुहुक कुहुक रह जाए, अरे सुन बाबुल मोरे।

बिना लोक से जुडे ऐसी संवेदनशीलता सम्भव ही नहीं है। इसी तरह उन्होने विभिन्न त्यौहारों पर गीत लिखे। खानकाहों में होली खेलने की परम्परा भी स्थापित की–

होली खेलन चलो री बिरज में सखी ,

होली खेलन चलो री चिश्त नगर में सखी,

मोरी लाल चुनरिया पै रंग बरसे गुलाब बरसे,

मोरे श्याम पिया तोरे दर्शन बिना मरि नयन तरसै ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

दिल्ली के कालकाजी मन्दिर में अमीर खुसरो ने अपने उदास गुरू को खुश करने के लिए बसंत पंचमी का प्राचीन हिन्दुत्यौहार मनाने का रिवाज शुरू किया।अमीर खुसरो सूफियों की चिश्तिया परम्परा में हजरत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। निश्तयों नेसमा और संगीत को मान्यता प्रदान की। अपने गीतों के माध्यम से खुसरो न केवल तसुव्वफ की तरफ झुक रहे थे बल्कि आम लोगों के दिलों में भी बस रहे थे।जब उन्होने हजरत निजाम की शिष्यता ली थी तो वह होली का दिन था। तब उन्होने जिस गीत कीरचना कीवह आज भी लोगों के जुबान पर है–

आज रंग है ऐ मां रंग है री,
मोरे महबूब के घर रंग है र
अरे अल्लाहतू है हर, मोहे पीर पायो निजामुद्दीन औलिया।

आज भी हजरत निजामुद्दीन की दरगाह पर जब सालाना उर्स का जलसा होता है तो खुसरो की सदा सुनाई देती है–

गोरी सोई सेज पर मुख पर डारे केस,
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहूँदेस।

अमीर खुसरो के अधिकांश हिन्दी रचनाओं के प्रणयन का उद्देश्य था कि सरल सुगम शब्दों में चिश्ती सूफी विचारधारा को आम लोगों तक पहूँचाना । सूफी रहस्यवाद ने उनको वह भाव–भूमि दी जिस पर वह अपने रहस्यात्मक प्रेम को व्यक्त कर सकते थे–

खुसरो रैन सुहाग को , जागी पी के संग ,
तन मेरो मन पीउ को, दोउ भये एक रंग।

भक्ति के इसी रहस्यवादी भाव को पकड कर भक्तिकाल में कबीर, जायसी, मीरा ने अपने प्रेम भाव को प्रकट किया। कबीर कहते हैं–

जब मैं था तब हरि नहीं,
अब हरि है मैं नाही।
प्रेम गली अति संकरी,
जा में दो न समाही।

अमीर खुसरो ने सारी जुबानों को जोड कर हिन्दवी की बुनियाद डाली। अरबी,फारसी संस्कृत,ब्रज,अवधी आदि जुबानों की अन्तर्क्रिया से हिन्दवी का जन्म हुआ। खुसरो हिन्दवी के पहले शायर थे। उन्होने जिस हिन्दवी का प्रयोग किया वही कमोवेश 12 वीं–18 वीं शताब्दी तक चलती रही।

बहुत कठिन है डगर पनघट की ,
कैसे भर लाऊँ मधवा से मटकी,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 02 February- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वास्तव में खुसरो का व्यक्तित्व ही समकालीन संस्कृतियों के संघात से बना था। इसीलिए खुसरो ने अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया पर जोर दिया चाहे वह भाषायी हो, धार्मिक हो या सांस्कृतिक स्तर पर हो। आज जो हम विविधता में एकता का विचार भारत के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं, उसमें खुसरो ही वह विविधता के तत्व हैं जो अन्तर्क्रिया से एकता के मजबूत बनाते है। खुसरो जब हिन्दुस्तान का वर्णन करते हैं तो उत्तर से दक्षिण तक तमिलनाडु तक, जबवह भाषा का जिक्र कर रहे हैं। एक तरह से वह समस्त भारतीय उपमहाद्वीप का प्रतिनिधित्व कर रहे होते है। वह हिन्दुस्तान की साझी संस्कृति के प्रतीक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. गोपी चंद नारंग,अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. प्रदीप शर्मा खुसरो , अमीरखुसरोः एक बहुआयामी व्यक्तित्व, साक्षी प्रकाशन दिल्ली।
3. अमीर खुसरोः हिन्दुस्तान की साझी संस्कृति , साझी विरासत सोफिया खातून , शोधार्थी, हिन्दीविभाग , अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय , अलीगढ।
4. webfimia .Amir Khasra Delhi-ignca.nic>coilnet>
5. देश देशतंर – भारतीय इतिहास कांग्रेस : अमीर खुसरो राज्यसभा टी0 वी0 जनवरी 10,2017.
6. htt[s:// literature fundam.com>wikiसअमीर खुसरो परिचय, Hindi literature fandom
7. कृष्णराम देवले– अमीर खुसरोः धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक webdunia